मेरे प्रिय मित्र का नाम प्रतीक दास है। वह बोहत अच्छे दील का है। वह बहुत परिश्रमी तथा एक चीज करके दीखाने वालो मे से एक है। वह कभी भी झुठ का सहारा नहीं लेता और हमेशा सच्च पथ पर चलता है। वह सबकी अच्छी चिजों को अपनाता है। और ऐसा भी नहीं है कि वह कभी भी मेरी गलती पर डांटा ना हो या समझाया ना हो और मेभी उसको उसकी गलतीयो पर डांटता नहीं या समझाता नही हूं। सचमे ऐसे दोस्त आसानी से नहीं मिलते लाखों मे एक होते है ऐसे दोस्त। मुझे आज भी याद है उसकी बात जब मेने वो स्कुल छोड़ा था। उसने यह कहा था की भाई हम स्कुल से तो अलग हो गए पर दोस्ती से नहीं। प्रतीक तु मेरा दोस्त था और रहेगा।